सांस्कृतिक वैभव सम्पन्न मेघालय

प्रियंका शुक्ल

भारत एक बहुभाषिक देश है। यहाँ के सभी राज्य बहुभाषिक हैं एवं हर एक व्यक्ति एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग दैनिक आचरण में सहज और स्वाभाविक स्तर पर करता है। बहुभाषिकता, भारत में समुदायपरक है एवं बहुभाषिक स्थिति एक सहज एवं प्राकृतिक लक्षण है और इसी प्रकृतिकता को सहेजे हुए भारतवर्ष का पूर्वोत्तर राज्य प्रकृति की अनोखी देन है। हिमालय के पाद-प्रांत में विस्तारित यह अंचल हरा-भरा है। पहाड़-पर्वत-मैदानी इलाकों से भरपूर यह क्षेत्र नद-नदियों की कल-कल ध्वनियों से मुखरित होता रहता है। इसका जन-जीवन वैचित्र्यमय है, अनेक जाति- उपजातियों के अतिरिक्त विभिन्न जन-गोष्ठियों का संगम है। जिसके कारण पूर्वोत्तर के राज्यों में अनेक विविधताएँ हैं। पूर्वोत्तर भारत में ऐसी भाषायी विविधता को समझना अत्यंत दुष्कर है। इनकी भौगोलिक संरचना इनके सांस्कृतिक तत्वों को पृथक करती है और स्पष्ट है कि जब सांस्कृतिक विविधता है तो भाषायी विविधता भी होगी। मेघालय राज्य अपनी संस्कृति, सभ्यता, भाषा, धर्म जीवन की विविधताओं से युक्त भारत के अन्य क्षेत्रों की भाँति ही भारत का यह पूर्वोत्तर क्षेत्र एक समाज ही नहीं अपितु ऐसे विभिन्न समाजों का समूह है, जिसमें हर समाज की अपनी एक अलग विशेषता है। मेघालय भारत का एक ऐसा स्थान है, जिसे बादलों का घर और मिनी स्कॉटलैंड भी कहा जाता है। मेघालय की भाषाई वैविध्यता की अपनी एक अनूठी विशेषता है। पूर्वोत्तर के भाषाई एवं सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश को समझने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अस्मिता निर्माण की प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। अस्मिता निर्माण की प्रक्रिया पूर्वोत्तर के प्रत्येक नृजातीय निवासी को आंतरिक बहुभाषिक विलक्षणता और विशिष्टता प्रदान करती है। मेघालय की खासी, गारो, जयंतिया जनजातियों ने प्रकृति को साथ लेकर भारत की बहुरंगी संस्कृति को एक नई दिशा प्रदान की है।

मेघालय अपनी वेश-भूषा और संस्कृति के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यहाँ महिलाएं अपने पारंपरिक पहनावे को ही पसंद करती हैं, जिसे जेनसम के रूप में जाना जाता है। गारो जनजाति की महिलाएं ब्लाउज के साथ लुंगी पहनती हैं, जिसको डाकमंडा के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा खासी जनजाति के पुरुष अपनी कमर के चारों तरफ लंबा कपड़ा और पगड़ी पहनते हैं।

यहाँ के त्योहारों की बात करें तो 'का पांबलांग नोंगक्रम' त्योहार जो कि नोंगक्रेम नृत्यु के नाम से भी बहुत ही प्रसिद्ध है जो हर नवंबर के महीने में आयोजित किया जाता है। यह त्योहार पाँच दिन का होता है और इस त्योहार को 'खासी जनजाति' के द्वारा 'फसल धन्यवाद' के रूप में मनाया जाता है। इस त्योहार की शुरूआत बकरी के बलि से की जाती है और इस त्योहार में खासी जनजाति के कुँवारे लड़के और लड़कियाँ साथ मिलकर नृत्य करते हैं। 'शादमिलसीम' भी खासी जनजाति का प्रमुख त्योहार है। यह पर्व अप्रैल माह के दूसरे सप्ताह में मेघालय की राजधानी शिलांग में मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त का-शाद-काइनजो

खास्केन, का बाम खाना श्रींग, उमसान नोंग खराई और शाद बेह शियर खासी जनजातियों के प्रमुख त्योहार में सम्मिलित हैं। गारो जनजाति के द्वारा यहाँ 'वंगाला त्योहार' बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्योहार गारो जनजाति के लोगों द्वारा अपने देवता 'सलजोंग' (सूर्यनारायण) को धन्यवाद कहने के लिए मनाया जाता है। यह त्योहार 'हर फसल के कटाई' के समय शरद ऋतु के अंत में मनाया जाता है और इस त्योहार को दो दिन तक मनाया जाता है। जिसका मुख्य आकर्षण 100 ड्रम या नागारे होते हैं। 'बेहदीनखलम' जयंतिया, आदिवासियों का महत्वपूर्ण एवं खुशनुमा त्योहार है, यह त्योहार आमतौर पर जुलाई मास में जयंतिया पहाड़ियों के जोवाई कस्बे में मनाया जाता है। खासी, गारो, जयंतिया, हैजोंग और बियाते जनजाति अन्य कई प्रकार के त्योहार और उत्सव अपने पारंपरिक तरीके से धूमधाम से मनाते हैं। इनके पारंपरिक त्योहारों के अलावा यहाँ क्रिसमस का त्योहार भूत ही उल्लास के साथ मनाया जाता है। दुगार्पूजा, दीवाली, छठ पूजा और ईद के त्योहार का उल्लास भी मेघालय में देखने को मिलता है।

मेघालय पूर्वोत्तर का मात्र एक ऐसा राज्य है, जहाँ ऐस्ट्रो- एशियाई भाषा परिवार की भाषा इखासी' बोली जाति है। यह यहाँ की बहुसंख्यक भाषा भी है। दूसरा बड़ा समुदाय इगारो' है, जो इतिब्बत-बर्मी' परिवार की भाषा है। अंग्रेजी इस राज्य की राज्य भाषा है तथा खासी एवं गारो को सहायक राजभाषा का मान्यता प्राप्त है। भारोपीय भाषा-भाषी की जनसंख्या लगभग 20 प्रतिशत है। अन्य राज्यों की तरह यहाँ भी वैकल्पिक आम भाषा के रूप में हिंदी भाषा का भी प्रचलन है। भाषा-भाषी जनसंख्या का विवरण निम्नलिखित हैः-

भाषा

भाषा-परिवार

प्रतिशत

खासी

एस्ट्रो-एशियाई

45.05%

गारो

तिब्बत-बर्मी

31.41

बंगाली

भारोपीय

8.04

नेपाली

भारोपीय

8.26

हिंदी

भारोपीय

2.17

असमी

भारोपीय

1.58

मराम

तिब्बत-बर्मी

1.53

राभा

तिब्बत-बर्मी

0.97

कोच

तिब्बत-बर्मी

0.90

बहुभाषी राज्य होने साथ-साथ मेघालय बहुसांस्कृतिक राज्य भी है। यहाँ भीं भिन्न धर्मों के लोग निवास करते हैं, जिसमें ईसाई धर्म के लोग बहुसंख्यक हैं। इनकी संख्या कुल आबादी का 70 फीसदी से भी अधिक है। भिन्न धर्मों के लोगों की जनसंख्या इस प्रकार है- ईसाई 70.25 फीसदी (खासी 80 फीसदी, गारो- 90 फीसदी एवं सिंटंग- 80 फीसदी), हिन्दू 13.27 फीसदी (कोच- 98 फीसदी, राभा 90 फीसदी एवं मिकिर 80 फीसदी), इस्लाम 3.27 फीसदी, सिख, जैन एवं बौद्ध -2.71 फीसदी तथा अन्य-5.25 फीसदी (49917 गारी मूल संगसारेक धर्म को और 202978 खासी समूह के लोग मूल नियामए शांग और निमंत्र धर्म को मानते हैं) और उपरोक्त स्थितियों के कारण भारतीय संस्कृति के लिए इअनेकता में एकता' जैसा विशेषण अकारण नहीं है। इसी कारण भारतीय संस्कृति के संबंध में टिप्पणी है कि भारतीय संस्कृति समुद्र

के समान है, जिसमें अनेक नदियां आकार विलीन होती रही हैं। जिसमें पूर्वोत्तर का मेघालय राज्य अद्‌वितीय उदाहरण है।

बहुसंस्कृति के तौर पर देखा जाए तो भारतीय संस्कृति एक प्रकार का आत्म-शिक्षण है। वह मन, बुद्‌धि और स्मृति को नियंत्रित करने वाली आत्मा से संबंधित है। जैसे- विभिन्न प्रकार के फूलों के पराग में गंध निहित होती है, उसी प्रकार संस्कृति भी साहित्य, संगीत, नृत्यु इत्यादि नाना प्रकार की शास्त्रसम्मत विधाओं का प्रतिरूप होती है। उसमें विज्ञान भी है, बंधन भी है और मुक्ति भी। इस प्रकार से हमें ज्ञात होगा कि हमारे चिंतन, मनन, अध्ययन एवं उत्तम संस्कारों का विराट स्वरूप भी बहुसंस्कृति है।

वर्तमान समय में विभिन्न समुदायों का ध्रुवीकरण- राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि होने के कारण एक समुदाय के लोगों का दूसरे समुदाय के साथ भाषिक संपर्क बढ़ता गया। भाषा विचारों की संवाहिका होती है। विचार परिवेशजन्य होते हैं। भौगोलिक स्वरूप के आधार पर परिवेश निर्मित होता है। इसी के आधार पर खान-पान, वेश-भूषा, आचार- व्यवहार, मनोरंजन एवं कलाओं की निर्मिती होती है। अतः विशाल भूखंड में भिन्नता का होना स्वाभाविक है और यही भिन्नता एक विशाल भारत का निर्माण करती है और इस निर्माण में सभी राज्यों के साथ-साथ मेघालय की भाषाई एवं समृद्‌ध सांस्कृतिक बहुलता का महत्वपूर्ण योगदान है और इस क्रम की हम सब देख सकते हैं कि बहुभाषिकता के साथ बहुसांस्कृतिक विरासत को सहेजे हुए मेघालय राज्य भारत की समसामयिक छवि को मजबूती प्रदान करता है।

संपर्क : शोधार्थी, हिंदी विभाग,

पूर्वात्तर पर्वतीय विश्वविद्‌यालय, शिलांग, मेघालय